

Prepared by - Mousumi Chatterjee

Sanskrit Department

Section - B, Hal-Sandhi

4th Semester, General

हलसन्धिप्रकरणम्सूत्र - इलाला जरीऽनी, (कलाः जलोऽरुः)

क> क् + स्वर्वर्ण = क् > ग्

दिक् + अन्तः = दिग्नानः, (दिक् + अन्तः = दिग्न्तः)

वाक् + इश्वियम् = वाग्निश्वियम्, (वाक् + इश्वियम् = वाग्निश्वियम्)

सम्यक् + सृष्टिम् = सम्यग्सृष्टिम्, (सम्यक् + सृष्टिम् = सम्यग्सृष्टिम्)

सम्यक् + स्त्रीजः = सम्यग्स्त्रीजः, (सम्यक् + स्त्रीजः = सम्यग्स्त्रीजः)

ख> क् + वर्णिय ऋय/४र्थ/म्/व्/र्/ल्/ह् = क् > ग्

दिक् + गजः = दिग्गजः, (दिक् + गजः = दिग्गजः)

वाक् + जालम् = वाग्जालम्, (वाक् + जालम् = वाग्जालम्)

वाक् + तुम्हर = वाग्तुम्हर, (वाक् + तुम्हर = वाग्तुम्हर)

वाक् + दानम् = वाग्दानम्, (वाक् + दानम् = वाग्दानम्)

प्राक् + घना = प्राग्घना, (प्राक् + घना = प्राग्घना)

वाक् + इनन्तकरः = वाग्इनन्तकरः, (वाक् + इन्तकरः = वाग्इन्तकरः)

वाक् + धर्म = वाग्धर्मः, (वाक् + धर्म = वाग्धर्मः)

वाक् + भ्रष्टः = वाग्भ्रष्टः, (वाक् + भ्रष्टः = वाग्भ्रष्टः)

ग> न् + स्वर्वर्ण = न् > ग्

अन् + अन्तः = अजन्तः, (अन् + अन्तः = अजन्तः)

अन् + इरु = अजिरु, (अन् + इरु = अजिरु)

घ> न् + वर्णिय ऋय/४र्थ/म्/व्/र्/ल्/ह् = न् > ग्

अन् + गीतः = अज्गीतः, (अन् + गीतः = अज्गीतः)

अन् + वन् = अज्वन्, (अन् + वन् = अज्वन्)

अन् + तृष्णः = अज्तृष्णः, (अन् + तृष्णः = अज्तृष्णः)

अन् + लक्ष्य = अज्लक्ष्य, (अन् + लक्ष्य = अज्लक्ष्य)

ট> ট + স্বরবর্ণ = ট > ট

সম্রাট্ + অয়ম् = সম্রাট্যম্, (অঘোট্ + অয়ম্ = প্রস্ত্রাত্যয়ম্)

সম্রাট্ + উবাচ = সম্রাট্বাচ, (অঘোট্ + উবাচ = প্রস্ত্রাত্বাচ)

সম্রাট্ + এতি = সম্রাট্তি, (অঘোট্ + এতি = প্রস্ত্রাত্তি)

সম্রাট্ + ইচ্ছিতি = সম্রাট্বিচ্ছিতি, (অঘোট্ + ইচ্ছিতি = প্রস্ত্রাজিতি)

সম্রাট্ + ঊর্ধমি = সম্রাট্বর্ধমি, (অঘোট্ + ঊর্ধমি = প্রস্ত্রাত্বর্ধমি)

সম্রাট্ + এইচ্ছতি = সম্রাট্বিচ্ছতি, (অঘোট্ + এইচ্ছতি = প্রস্ত্রাজিচ্ছতি)

ট> ট + বর্গস্থি ৩য়/৪ র্থ/য়/ব/ই/ল/হ = ট > ট

সম্রাট্ + গচ্ছিতি = সম্রাট্বগচ্ছিতি, (অঘোট্ + গচ্ছিতি =

সম্রাট্ + বদ্ধিতি = সম্রাট্ববদ্ধিতি, (অঘোট্ + বদ্ধিতি = প্রস্ত্রাত্ববদ্ধিতি)

সম্রাট্ + বন্ধুঃ = সম্রাট্ববন্ধুঃ, (অঘোট্ + বন্ধুঃ = প্রস্ত্রাত্ববন্ধুঃ)

সম্রাট্ + দৃসন্তি = সম্রাট্বদৃসন্তি, (অঘোট্ + দৃসন্তি = প্রস্ত্রাত্বদৃসন্তি)

চ> চ + স্বরবর্ণ = চ > চ

তন্ত্ + অন্তঃ = তত্ত্বন্তঃ, (তেঁ + অন্তঃ = তদ্বন্তঃ)

জগন্ত্ + ইশঃ = জগাদ্বীশঃ, (জগঁ + ইশঃ = জগাদ্বীশঃ)

ভবন্ত্ + ভৱণম্ = ভবত্বুণম্, (ভবঁ + ভৱণম্ = ভবত্বুণম্)

জগন্ত্ + ইন্দ্ৰঃঃ = জগাদ্বিন্দ্ৰঃঃ, (জগঁ + ইন্দ্ৰঃঃ = জগাদ্বিন্দ্ৰঃঃ)

ভবন্ত্ + উক্তিঃ = ভবত্বুক্তিঃ, (ভবঁ + উক্তিঃ = ভবত্বুক্তিঃ)

জগন্ত্ + এন্ত্ = জগাদ্বেন্ত্, (জগঁ + এন্ত্ = জগাদ্বেন্ত্)

জ> জ + বর্গস্থি ৩য়/৪ র্থ/য়/ব/ই/ল/হ = জ > জ

সন্ত্ + গ্রান্তিঃ = সদ্ব্যুগ্রান্তিঃ, (সঁ + গ্রান্তিঃ = প্রস্ত্রান্তিঃ)

সন্ত্ + দানম্ = সদ্ব্যুদানম্, (সঁ + দানম্ = প্রস্ত্রানম্)

সন্ত্ + বন্ধুঃ = সদ্ব্যুবন্ধুঃ, (সঁ + বন্ধুঃ = প্রস্ত্রবন্ধুঃ)

বৃষ্টন্ত্ + ঘটঃ = বৃষ্টব্যুঘটঃ, (বৃষ্টঁ + ঘটঃ = প্রস্ত্রব্যুঘটঃ)

সন্ত্ + ধৰ্মঃ = সদ্ব্যুধৰ্মঃ, (সঁ + ধৰ্মঃ = প্রস্ত্রধৰ্মঃ)

মহুন্ত্ + ভয়ম্ = মহুব্যুভয়ম্, (মহুঁ + ভয়ম্ = প্রস্ত্রব্যুভয়ম্)

প> প + স্বরবর্ণ + বর্গস্থি ৩য়/৪ র্থ/য়/ব/ই/ল/হ = প > প

অপ্ + ঘটঃ = অব্যুঘটঃ, (অপ্ + ঘটঃ = প্রস্ত্রব্যুঘটঃ)

অপ্ + দৃৱণম্ = অব্যুৱণম্, (অপ্ + শুণক্ = প্রস্ত্রব্যুৱণক্)